

## Padma Shri



### **DR. SHANKARBABA PUNDLIKRAO PAPALKAR**

Dr. Shankarbaba Pundlikrao Papalkar is a personality who has dedicated his entire life to society especially for the disabled and destitute children.

2. Born on 14<sup>th</sup> February, 1942, Dr. Papalkar started a wonderful but very difficult task of providing shelter to all such disabled people. In 1990, he received 25 acres of land in a small town called Vajjhar, 50 Km away from the town Amravati. He started the "Late Ambadaspant Orphanage for Divyang and destitute children" on this barren land. In the beginning, there were only four disabled girls in this ashram who were brought from different parts of the country and handed over to him. He accepted these four girls in the Ashram and from then onwards this amazing process of social welfare started.

3. Today, in his ashram, a total of 98 girls and 25 boys live. Dr. Papalkar not only sheltered them but also gave them their identity. Today, Aadhaar cards of 123 children of this ashram have been made on which their father's name is written, Dr. Shankarbaba Pundlikrao Papalkar.

4. The upbringing that Dr. Papalkar has given to these children is in itself an example for society. While fulfilling the responsibility of all these children, he has done another amazing work. To include the marriageable boys and girls of the ashram in the mainstream of life, he used the social system to arrange marriages for them in good families. Till date, his 21 daughters and 3 sons have been married with great vigour and participation of masses. Today, 12 children who grew up in his ashram have got different government jobs. All the 123 disabled children of the ashram, are the beneficiaries of the Prime Minister's Jan Dhan Yojana.

5. This ashram, which was started on barren land in 1990, is today full of green trees with about 15,000 trees, which are looked after by Dr. Papalkar through these 123 disabled children. His work and life have become an example. He was awarded Honorary D.Litt by Sant Gadge Baba Amravati University.

6. Dr. Papalkar has established a successful model of self-help and identity for the Divyang children in the name of the "Vazzar Model" where the children take care of each other and find the way to lead a respectable and proud life. With such dedicated work towards these Divyang children, he has proved to be the epitome of social responsibility and commitment and a guiding force for generations to come.

पद्म श्री



## डॉ. शंकरबाबा पुंडलिकराव पापळकर

डॉ. शंकरबाबा पुंडलिकराव पापळकर एक ऐसी शख्सीयत हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन समाज, खासकर दिव्यांग और बेसहारा बच्चों के लिए समर्पित कर दिया है।

2. 14 फरवरी, 1942 को जन्मे डॉ. पापळकर ने ऐसे सभी दिव्यांग लोगों को आश्रय प्रदान करने का एक शानदार लेकिन बहुत मुश्किल काम शुरू किया। 1990 में, उन्हें अमरावती शहर से 50 किलोमीटर दूर वज्जर नामक एक छोटे से शहर में 25 एकड़ जमीन मिली। उन्होंने इस बंजर भूमि पर "दिव्यांग और निराश्रित बच्चों के लिए स्वर्गीय अम्बादासपंत अनाथालय" आरंभ किया। शुरुआत में, इस आश्रम में केवल चार दिव्यांग लड़कियां थीं जिन्हें देश के अलग-अलग हिस्सों से लाकर उन्हें सौंपा गया था। उन्होंने इन चारों लड़कियों को आश्रम में रख लिया और और तभी से समाज कल्याण की यह अद्भुत प्रक्रिया शुरू हुई।

3. आज उनके आश्रम में कुल 98 लड़कियां और 25 लड़के हैं। डॉ. पापळकर ने न केवल उन्हें आश्रय दिया बल्कि उन्हें उनकी पहचान भी दी। आज, इस आश्रम के 123 बच्चों के आधार कार्ड बन चुके हैं, जिन पर उनके पिता का नाम डॉ. शंकरबाबा पुंडलिकराव पापळकर लिखा है।

4. डॉ. पापळकर ने इन बच्चों का जो लालन-पालन किया है, वह अपने आप में समाज के लिए एक मिसाल है। इन सभी बच्चों की जिम्मेदारी निभाते हुए उन्होंने एक और अद्भुत काम किया है। आश्रम के विवाह योग्य लड़के-लड़कियों को जीवन की मुख्य धारा में शामिल करने के लिए उन्होंने सामाजिक व्यवस्था के आधार पर अच्छे परिवारों में उनका विवाह कराया। अब तक उनकी 21 बेटियों और 3 बेटों की शादियां बड़े धूमधाम और जनसहभागिता से हो चुकी हैं। आज उनके आश्रम में पले-बढ़े 12 बच्चों को अलग-अलग सरकारी नौकरियां मिल चुकी हैं। आश्रम के सभी 123 दिव्यांग बच्चे प्रधानमंत्री जनधन योजना के लाभार्थी हैं।

5. 1990 में बंजर भूमि पर शुरू किया गया यह आश्रम आज लगभग 15,000 हरे-भरे पेड़ों से भरा हुआ है, जिनकी देखभाल डॉ. पापळकर इन 123 विकलांग बच्चों की मदद से करते हैं। उनका कार्य और जीवन एक मिसाल बन गया है। उन्हें संत गडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय ने मानद डी.लिट् की उपाधि से सम्मानित किया।

6. डॉ. पापळकर ने "वज्जार मॉडल" के नाम से दिव्यांग बच्चों के लिए स्वयं सहायता और पहचान का एक सफल मॉडल स्थापित किया है, जहां बच्चे एक-दूसरे की देखभाल करते हैं और सम्मानजनक व गौरवपूर्ण जीवन जीने का रास्ता तलाश करते हैं। इन दिव्यांग बच्चों के प्रति ऐसे समर्पित कार्य के द्वारा, वह सामाजिक दायित्व और प्रतिबद्धता के प्रतीक और आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक बन गए हैं।